श्रम विभाग

ग्रादेश

दिनांक 15 अक्तूबर, 1987 -

सं० भ्रो० वि०/एफ०डी०/58-87/41215 - चूंकि इरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मुख्य प्रशासक, फरीदाबाद मिश्रित प्रशासन, फरीदाबाद के श्रीमक श्री लाल चन्द, पुत्र श्री कृष्ण राम, मकान नं० 33/115, एन० ग्राई०टी०, फरीदाबाद तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीबोगिक विवाद है;

्रीं और चूंकि हरियाणां के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, ग्रव, ग्रोद्योगिक विवाद श्रिविनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तरणे का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त श्रीविनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित ग्रौद्योगिक श्रीविकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है श्रया विवाद से सुसंगत या संबंधित मामला है न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री लाल चन्द की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो वि /पानी /85-87/41222 - चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) मैनेजिंग डायरैक्टर, हरियाणा देरिजेंम (यूनाईटिंड होंडस), सैक्टर 17, चण्डीगढ़, (2) ट्रिजेंम आफिसर, स्काई लार्क, पानीपत के अविक भी गोपाल बहादुर, मार्फत भारतीय मजदूर संघ, जी ब्टी रोड, पानीमत तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इतमें इसके बाद लिखित मानले में कोई औद्योगिक विवाद है;

श्रीर चुकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, अब, औद्योगिक विनाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 3(44)84-3श्रम, दिनांक 18 धप्रैल, 1984, द्वारा उक्ते अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, अन्वाला, को विवादप्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री गोपाल बहादुर की सेवा समाप्ति/छाटी की गई है या उसने कार्य से स्वयं ही गैर-हाजिर हो कर नौकरी से किल्ले प्रथमा पुरुषप्रहण (लियन) खोया है ? इस बिन्दू पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हर्कदार है ?

सं भी वि वि (पानीपत 89-87/41230 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राष्ट्र है कि (1) सचिव, हरियाणा र राज्य विजली बोर्ड, चण्डीगढ़, (2) कार्यकारी अभियन्ता (एस आई०), कन्स्ट्रक्शन डिविजन, हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड, करनाल के अभिक श्री परमजीत मार्फत भारतीय मंजदूर संघ, जी० टी० रोड, पानीपत तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित, मुमुले के सम्बन्ध में कोई भीधोगिक, विवाद, है

भीरी चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायिनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करनी वार्छनीय समझते हैं हैं

इसलिए, अब, मोद्यौगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारी प्रदान की गई शिवादा का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी, श्रधिसूचना सं० 3(44) 84+ 28म, दिनांक 18 अप्रैल, 1984, द्वारा उक्त श्रधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रावाला, को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा, मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हैं तूं, निदिष्ट करते हैं जो कि उन्हा प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

्रम्या श्री प्रमणीत की सेवाओं का समापन/छंडनी न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हुकदार है ?